UGC NET - PSYCHOLOGY
SAMPLE THEORY
PAPER - II

- प्रत्याक्षणात्मक उपागम
- प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण
- प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ
- प्रत्यक्षीकरण के सिद्धान्त

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Tel No. 0744-2429714
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

1. **प्रत्याक्षणात्मक उपागम**

प्रत्यक्षीकरण का अर्थ __________बोरिंग (1982) के अनुसार, ''संवेदना और प्रत्यक्षीकरण में अंतर साधारणतः इस कल्पना के आधार पर किया जाता है कि संवेदना का अभिप्राय ग्राहक के उस कार्य से है जब वह उद्दीप्त होता है तथा प्रत्यक्षीकरण का अभिप्राय संवेदना को अर्थ प्रदान करने से है।''

आइजनेक (1972) तथा उसके साथियों के अनुसार, '' प्रत्यक्षीकरण प्राणी का एक मनोवैज्ञानिक प्रकार्य है जिसका संबंध वातावरण की स्थिति या परिवर्तनों की सूचना ग्रहण करने तथा प्रणाली (Process) से है।

रैथस (S.A. Rathus, 1984) के अनुसार, '' प्रत्यक्षीकरण वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा संवेदी सूचनाओं की व्याख्या की जाती है।''

बार्टली (S.H. Bartely, 1958) ने अपनी पुस्तक ''प्रिंसिपल ऑफ परसेप्शन'' में अनेक परिभाषाओं का पुनरावलोकन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करने वाले ऊर्जा संबंधी प्रभाव अथवा उससे तुरंत बाद घटित होने वाली प्राणी की समस्त क्रियाएँ प्रत्यक्षीकरण के अन्तर्गत आती हैं। इन्होनें प्रत्यक्षीकरण को मध्यस्थताकारी प्रक्रम (Mediational Processes) माना है। तथा इस प्रक्रम से संबंधित तीन प्रक्रम बताते हैं –

(1) प्रक्रम का पहला भाग वातावरण में होने वाले ऊर्जा परिवर्तनों के संज्ञापन (Detection) से संबंधित होता है।

(2) प्रक्रम का दूसरा भाग उद्दीपक ग्रहण से स्नायु आवेग (Nerve Impulse) में परिवर्तित होने से संबंधित है।

(3) प्रक्रम का तीसरा भाग इन स्नायु आवेगों के पूर्व अनुभवों के साथ जुड़ने से संबंधित है।

फोर्गस (R.H. Forgus, 1966) ने यह माना है कि प्रत्यक्षीकरण वह प्रक्रम है जो वातावरण से सूचना का अवशोषण (Information Extraction) करता है। जिसकी चार अवस्थाएँ हैं –

(1) प्रथम में ज्ञानेद्रियों के माध्यम से भौतिक ऊर्जा ग्रहण की जाती है।

(2) द्वितीय में सूचना देने वाले स्नायु आवेग मस्तिष्क के रूप में भौतिक ऊर्जा का नया परिवर्तित रूप होता है।

(3) तृतीय अवस्था में जब स्नायु आवेग मस्तिष्क में पहुँचते है तो कुछ मध्यस्थताकारी क्रियाएँ उत्पन्न होती है। इन क्रियाओं का कार्य स्नायु आवेगों से प्राप्त सूचना को परिवर्तित और पुनर्गठित करना होता है।

(4) चतुर्थ अवस्था का संबंध प्राणी के प्रत्यक्षपरक (Perceptual) अनुभवों से है तथा इन अनुभवों में व्यक्ति का वाचिक और शारीरिक व्यवहार भी सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रत्यक्षीकरण वह मनोवैज्ञानिक प्रकार्य या मध्यस्थकारी प्रक्रम या सूचना अवशोषण की व्यवस्था है, जिसका संबंध वातावरण की उत्तेजनाओं के संबंध में सूचना ग्रहण कर प्रोसेस करना है। इस प्रोसेस में कई महत्वपूर्ण अवस्थाएँ हैं –

(1) वातावरण में होने वाले ऊर्जा परिवर्तनों का संज्ञापन (Detection) करना।

(2) ऊर्जा परिवर्तनों को ग्रहण करने के बाद इन्हें स्नायु आवेगों (Nerve Impules) से परिवर्तित करना।

(3) इन स्नायु आवेगों के मस्तिष्क मे पहुँचने पर कुछ मध्यस्थताकारी प्रक्रम (Mediational Processes) या संबंधित साहचर्य सक्रिय हो जाते है जो सूचना को परिवर्द्धित, पुनर्गठित तथा परिवर्तित करते हैं।

(4) अन्त में इस मध्यस्थताकारी प्रक्रिया के बाद प्राणी उद्दीपक के विशेष पक्षो का चयन कर उद्दीपक का अर्थ प्राप्त करता हैं अर्थात् उसे प्रत्यक्षपरक अनुभव होता है तथा इन प्रत्यक्षपरक अनुभवों का द्योतक उसका वाचिक और शारीरिक व्यवहार होता हैं।

प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण (Analysis of Perception)

प्रत्यक्षीकरण के विश्लेषण के परिणामस्वरूप प्रत्यक्षीकरण में मुख्य चार प्रतिक्रियाएँ होती है। इनमें से कुछ उपर्युक्त विवरण के अन्तर्गत समझाई गई हैं।

1. संग्राहक प्रक्रियायें (Receptor Processes)

जब ज्ञानेन्द्रियाँ के सामने कोई उद्दीपक उपस्थित होता है तो ज्ञानेन्द्रियाँ प्रभावित होती है और सक्रिय हो जाती है, फलस्वरूप इन ज्ञानेन्द्रियों से नाड़ी प्रवाह ज्ञानवाही नाड़ियों के द्वारा होता हुआ सुषुम्ना और अंत में मस्तिष्क के कुछ विशेष क्षेत्रो में पहुंचता है।

2. प्रतीकात्मक प्रक्रियायें (Symbolic Processes)

जब संग्राहक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप नाड़ी आवेग मस्तिष्क में पहुंचते है तो संवेदना होती है, इन संवेदनाओं से मस्तिष्क का साहचर्य क्षेत्र उद्दीप्त हो जाता है। साहचर्य क्षेत्र के उद्दीप्त क्षेत्र के उद्दीप्त होने से पूर्व अनुभवों का स्मरण हो जाता हैं।

3. **एकीकरण प्रक्रिया (Unification Process)** – इस प्रक्रिया के अन्तर्गत उद्दीपक के फलस्वरूप विभिन्न संवेदनाओं और उत्पन्न प्रतिमाओं का एकीकरण होता है। जो उद्दीपक से संबंधित संवेदनाएँ और प्रतिमाएँ है वह एक साथ जुड़ती जाती है या उनका एकीकरण होता जाता है।

4. **भावात्मक प्रक्रिया (Affective Process) -** एकीकरण प्रक्रिया के फलस्वरूप उद्दीपक का व्यक्ति को अर्थ स्पष्ट हो जाता है और भावात्मक प्रक्रिया के अन्तर्गत उद्दीपक के अर्थ के साथ सुखद, दुःखद अथवा तटस्थ आदि भाव जुड़ जाते है और फलस्वरूप व्यक्ति को प्रत्यक्षपरक अनुभव होता हैं।

प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ (Characteristics of Perception)

प्रत्यक्षीकरण की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार से हैं –

(1) यह एक मनोवैज्ञानिक प्रकार्य (Psychological Function) है।

(2) प्रत्यक्षीकरण का प्रथम प्रक्रम (Process) वातावरण में होने वाले भौतिक ऊर्जा परिवर्तनों का संज्ञापन (Detection) करना है ।

(3) प्रत्यक्षीकरण के द्वितीय प्रक्रम में ग्रहण की हुई भौतिक ऊर्जा को ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से स्नायु आवेग Nerve Impulse) मे परिवर्तित करना हैं।

(4) प्रत्यक्षीकरण के तृतीय प्रक्रम में यह स्नायु – आवेग जब मस्तिष्क में पहुँचते है तो कुछ मध्यस्थताकारी (Mediational) प्रक्रम उत्पन्न होते हैं। जब स्नायु आवेग मस्तिष्क में पहुँचते है तो उद्दीपक से संबंधित अनेक संवेदनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(5) प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपक से संबंधित संवेदनाओं में एकता और संगठन (Unity and Organization) पाया जाता है अर्थात् संवेदनाएँ बिखरी न होकर संगठित रूप में होती हैं एक उद्दीपक के रंग, गन्ध, आकार, स्पर्श आदि से संबंधित संवेदनाएँ जब संगठित रूप में होती है तभी उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण होता हैं।

1.2 अंतर

प्रत्यक्षीकरण प्रस्तुत वस्तु से प्राप्त संवेदना को अर्थ प्रदान करता हैं। (Perception is the interpretation of the sensation coming from a present object) -

1. **विभेदीकरण (Discrimination)** – जब कोई संवेदना हमें प्राप्त होती है तो हम उसे अन्य संवेदनाओं से पृथक कर लेते हैं

2. **सदृशीकरण अथवा सम्मिश्रण (Assimilation) –** वर्तमान संवेदना को पूर्व संवेदना के साथ सदृशीकृत कर दिया जाता है।

3. **पुनर्स्मरण या पुनरावर्तन (Revival or Reproduction) –** इस प्रक्रिया में वर्तमान संवेदना अनेक संवेदनाओं को जाग्रत करती है।

4. **स्थानीकरण (Socialization) –** इसमें वर्तमान संवेदना और अतीत के अनुभव मिलकर हमें उस वस्तु का ज्ञान देते है जो हमारे सम्मुख हैं।

प्रत्यक्षीकरण में मुख्य दो तत्व होते हैं –

''उपस्थितिकरण'' (Presentation)

''प्रतिनिधि'' (Representation)

संवदेना तथा प्रत्यक्षीकरण में अंतर (Difference between Sensation and Perception) –

संवेदना तथा प्रत्यक्षीकरण में निम्न प्रकार के अंतर पाए जाते हैं –

1. संवेदना एक सरल मानसिक प्रक्रिया, जबकि प्रत्यक्षीकरण एक जटिल प्रक्रिया है। संवेदना प्रत्यक्षीकरण का एक भाग या एक तत्व है। प्रत्यक्षीकरण में संवेदना के अतिरिक्त, अन्य मानसिक प्रक्रियाएं भी सम्मिलित होती हैं।

2. संवेदना केवल मानसिक उपस्थितिकरण (Presentative) प्रक्रिया है, जबकि प्रत्यक्षीकरण प्रत्यक्ष और प्रतिनिधि **(Presentative and Representative)** दोनो हैं। **पिल्सबरी** के शब्दों में, ''स्मृति और संवेदना का सामंजस्य ही प्रत्यक्षीकरण है जिनसे संवेदना और स्मृति पहचानी नहीं जा सकती।''

3. संवेदना किसी वस्तु की प्रथम अनुभूति है, प्रत्यक्षीकरण उस वस्तु के संबंध का स्पष्ट ज्ञान है। हमारे ज्ञान का कच्चा माल **(Raw Material)** संवेदना ही है और इसी आधार पर बाह्य वस्तुओं का स्पष्ट ज्ञान प्रत्यक्षीकरण द्वारा होता है।'' संवेदना हमें वस्तुओं का केवल प्राथमिक परिचय कराती है, जबकि प्रत्यक्षीकरण हमें उन वस्तुओं का ज्ञान प्रदान कराता हैं।''

4. संवेदना का उद्दीपक द्वारा उत्पन्न मानव का प्रथम प्रत्युत्तर है, जबकि प्रत्यक्षीकरण द्वारा प्रत्युत्तर, जो संवेदना के बाद होता है।

5. संवेदना एक सरल और स्पष्ट क्रिया है, जबकि प्रत्यक्षीकरण बदल भी सकता है।

6. प्रत्यक्षीकरण संवेदना से अधिक सक्रिय होता है। संवेदना में व्यक्ति अपेक्षाकृत निष्क्रिय होता है और बाहर से उद्दीपक ग्रहण करता है। प्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति सक्रिय होकर अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करता हैं।

1.3 गेस्टाल्ट उपागम____________प्रत्यक्षीकरण का गैस्टाल्ट सिद्धान्त (Gestalt Theory of Perception) –

प्रत्यक्षीकरण किसी भी ज्ञानेन्द्रिय से संबंधित क्यों न हो जब यह पूर्ण (Whole) के रूप में होता है तभी व्यक्ति को उद्दीपक या वस्तु का वास्तविक रूप स्पष्ट होता हैं। अंग्रेजी का शब्द (Gastalt) जर्मन शब्द (Gstalten) के समान है, जिसका अर्थ हैं – रूप (Form) तथा पूर्ण (Whole) । Gestalt सिद्धान्त के प्रतिपादक गैस्टाल्ट सम्प्रदाय के मनोवैज्ञानिक है। इस सम्प्रदाय की स्थापना सन् 1912 में हुई। इस सम्प्रदाय के संस्थापकों में मुख्यतः तीन मनोवैज्ञानिकों के नाम लिए जाते हैं – वर्दीमर, कोहलर, कोफेका। गैस्टाल्ट सम्प्रदाय के मनौवैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण उद्दीपक के खण्डों के रूप में न करके पूर्ण (Whole) के रूप में करता है। प्रत्यक्षीकरण में गैस्टाल्ट सि;द्धान्त में दो मुख्य नियम हैं

1. **समग्रता का नियम (Law of Whole) –** गैस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुसार प्राणी उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण समग्र रूप में करता है। किसी उद्दीपक के आकार, रंग, गंध, रूप आदि से संबंधित संवेदनाएँ क्रमशः या अलग – अलग न होकर एक समग्र अथवा पूर्ण रूप में होती है। उदाहरण के लिए यदि हम पेन का प्रत्यक्षीकरण करते है तो पेन का प्रत्यक्षीकरण एक पेन के रूप में अथवा उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण समग्र रूप में करते है। ऐसी नही कहा जा सकता है कि हम पेन की निब, बॉडी, कैप, क्लिप, आकार, रंग आदि का प्रत्यक्षीकरण अलग – अलग नही करते बल्कि पेन की इन सब विशेषताओं का प्रत्यक्षीकरण पूर्ण अथवा समग्र रूप में करते है।
2. **आकृति और पृष्ठभूमि का नियम (Law of Figure and Background) –** दृष्टि प्रत्यक्षीकरण में आकृति और पृष्ठभूमि प्रत्यक्षीकरण अधिक महत्वपूर्ण इसलिए है कि हम आकृतियों का प्रत्यक्षीकरण शून्य में न करके किसी –न – किसी पृष्ठभूमि अथवा आधार पर करते है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि आकृति और पृष्ठभूमि प्रत्यक्षीकरण केवल दृष्टि संवेदनाओं में ही होता है बल्कि यह प्रत्यक्षीकरण अन्य

सभी प्रकार की संवेदनाओं मैं होता है। उदाहरण के लिए, वाद्यों की ध्वनि की पृष्ठभूमि में किसी गीत का सुनना श्रवण प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र से है।

1.4 अन्य उपागम

I. मनोविश्लेषणवाद – आस्ट्रिया के चिकित्सक फ्रायड ने इस सम्प्रदाय की स्थापना 1900 में की। 1912 में सम्प्रदाय से दो अन्य नए सम्प्रदायों – वैयक्तिक मनोविज्ञान और विश्लेषणात्क मनोविज्ञान का आरम्भ हुआ तथा 1930 के उपरांत इसकी नई शाखा 'नवीन फ्रायडवाद' का आरंभ हुआ। इसके प्रभाव के फलस्वरूप ही मनोविज्ञान मन के विज्ञान के स्थान पर मनोविज्ञान अचेतन मन का विज्ञान कहा जाने लगा। स्वप्न तथा अचेतन मन से संबंधित अनेक समस्याओं का अध्ययन मनोविज्ञान में किया जाने लगा। व्यक्तित्व – विश्लेषण के लिए फ्रायड ने इदम (Id), अहं (Ego) एवं पराहं (Super Ego) संप्रत्ययों का विकास किया। उसने मानव मन को चेतन, पूर्वचेतन और अचेतन प्रक्रमों के रूप में देखा। नवफ्रायडवादी जैसे फ्राम, सलीवॉन, हॉनी तथा इरिक्सन ने फ्रायड के विचारों को परिमार्जित और परिवर्धित किया है।

II. प्रयोजनवाद – इस सम्प्रदाय की स्थापना मैक्डूगल ने की। मैक्डूगल का विचार है कि प्राणी के प्रत्येक व्यवहार के पीछे कोई– न – कोई प्रयोजन अवश्य होता है। उठने – बैठने और विचार करने आदि सामान्य कार्यो में भी कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। अतः मैक्डूगल ने सम्पूर्ण व्यवहार की उत्पत्ति का कारण प्रेरणाओं को माना है। उसने प्रेरणाओं या प्रयोजनों को मूल प्रवृत्ति की भी संज्ञा दी है।

III. संरचनावाद – संरचनावादी सम्प्रदाय (Structurlaism) का जन्म वुण्ट और टिचनर के योगदानों के फलस्वरूप हुआ। इसका प्रारम्भ वुण्ट ने 1879 में और टिचनर ने 1898 में किया। इसने मनोविज्ञान का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा करने पर बल दिया। इसकी अध्ययन पद्धति यद्यपि अर्न्तदर्शन थी परन्तु टिचनर ने अर्न्तदर्शन को आत्म – निरीक्षण कहा है तथा इस पद्धति को व्यवस्थित कर वैज्ञानिक रूप देने का प्रयास किया है। इसके मतानुसार मनुष्य के सभी मानसिक अनुभवों को छोटे – छोटे तत्वों की संयुक्तियों के रूप में समझा जा सकता है।

1. **संग्राहक प्रक्रियाएं** – प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन प्रायः उसमें प्रमुख रूप से सन्निहित संग्राहक प्रक्रियाओं की दृष्टि से किया जाता है। हम दृष्टि, श्रव्य, गंध, रस, स्पर्श, स्थिति और आंगिक प्रत्यक्षों इत्यादि की चर्चा करते हैं। जब प्रत्यक्षीकरण किसी एक विशेष संग्राहक प्रक्रिया में सीमित होता है, जैसे दृष्टि, तो

वहां भी ग्रहण करने के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ समाविष्ट होता है। इस प्रक्रिया में निहित प्रत्यक्षीकरण कुछ अत्यन्त जटिल घटनाओं का सूत्रपात कर देता है, जैसे छछूंदर के चित्र (दृष्टि – उद्दीपन) में हमें उसकी गंध याद आ सकती है। अर्थात् हमारे सामने छछूंदर मौजूद न होने पर भी हमें उसकी गंध की सुस्पष्ट अनुभूति हो सकती है।

2. **प्रतीकात्मक प्रक्रियाएं –** प्रतीकात्मक प्रक्रियाओं के भी विचित्र नाम हैं। किसी वस्तु की याद आ जाना अथवा किसी वस्तु की प्रतिमा प्राप्त करना प्रतीकात्मक प्रक्रियाएं हैं जिन्हें हम साधारण बोलचाल में विचार कहते है। स्मृति और विचार की समीक्षा में यह बतलाया जा चुका हैं कि उद्दीपन के द्वारा उत्पन्न नाड़ीय क्रियाएं नाड़ीतंत्र में अपना चिह्न अथवा आलेख छोड़ जाती है। ये चिह्न तब मौलिक स्थिति क्रिया और अनुभूति का प्रतिनिधित्व करते है, अथवा उनके स्थापन्न बन जाते हैं। एक बहुत ही सरल उदाहरण लीजिए – अपनी माँ के चेहरे याद कीजिए। मैं यह भी कह सकता था, ''अपनी माँ के चेहरे की प्रतिमा याद कीजिए।' अपनी माँ के चेहरे की कल्पना कीजिए।'' या '' अपनी माँ के चेहरे को याद कीजिए।'' इन सब वाक्यों का एक ही अर्थ होता है। तब आपको अपनी माँ की जो प्रतिमा प्राप्त होती है वह अत्यन्त स्पष्ट अथवा धुंधली हो सकती है। यदि आप जन्मांध नही है तो सबसे अधिक सम्भावना इसी बात की है कि यह प्रतिमा दृश्य प्रतिमा होगी, जैसे कि आप अपनी माँ के चेहरे को देख रहे हों। सबसे महत्व की बात यह है कि इस प्रकार की प्रतिमा उस समय की पूर्वकालीन उत्तेजना पर निर्भर करती है जब स्वयं अपनी माता अथवा उसका कोई चित्र आपके सामने प्रत्यक्ष उपस्थित था। सारांश यह है कि माँ के चेहरे से अतीत में जो कुछ भी संबद्ध रहा है, वह सब प्रतीकात्मक व्यवहार को आरम्भ कर सकता है।

प्रतीक वह वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु का प्रतिनिधित्व करती है। शब्द प्रतीक है क्योंकि वे वस्तुओं, स्थितियों और घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते है।

अतएव कोई भी प्रस्तुत उद्दीपक संग्राहक व्यवहार को उत्पन्न करने के अतिरिक्त प्रतीकात्मक व्यवहारों को भी उत्पन्न करता हैं।

3. **भावनात्मक प्रक्रियाएँ :** प्रत्येक प्रत्याक्षात्मक अनुभूति का अपना व्यवहार पक्ष भी होता है। हम किसी विषय को केवल देखने – मात्र नहीं है और न हम किसी पूर्वकालीन संवेदनात्मक उद्दीपक की प्रतिमाएं – मात्र होती है, वरन् ऐसे सब विषय हमें सुखकर, कष्टकर, अथवा ऐसे कुछ भी नही, प्रतीत

होते हैं। उद्दीपन के कुछ प्रकार, जैसे बिजली का एक तीव्र आघात या सुई का चुभना, सदैव ही कष्ट या पीड़ा की भावना उत्पन्न करते हैं, उनमें हमारा सम्पर्क चाहे पहले हुआ हो या नहीं।

4 **प्रत्याक्षणात्मक प्रक्रिया** – पूर्वगामी विवेचना से यह स्पष्ट हो गया कि कुछ हमें प्रत्यक्ष होता है वह संग्राहक, प्रतीकात्मक और भावनात्मक प्रक्रियाओं के उत्तेजित होने पर निर्भर करता हैं।

हमें जो भी प्रत्यक्ष होता है वह वस्तु, स्थिति अथवा घटना की भूमिका अथवा सामान्य विन्यास पर भी निर्भर करता है। भूमिका से संबद्ध कतिपय प्रभाव नितांत आदिम और संभवतः जन्मजात होते हैं। अन्य प्रभाव स्पष्टतया अतीत की अनुभूति – जन्य होते है।

अतीत की अनुभूति के घटक को प्रायः अभ्यास घटक कहते है। वह इस तथ्य की व्याख्या करता है कि बाह्र दृष्टि से अभिन्न स्थितियों को भिन्न – भिन्न व्यक्ति भिन्न – भिन्न प्रकार से क्यों अनुभव करते है।यह तथ्य हमें अवधानात्मक प्रवृत्तियों या मानसिक स्थिति, मानसिक विन्यास के प्रभाव के प्रश्न पर फिर ले आता है। ऐसे विन्यास या मानसिक स्थितियां भी अतीत अनुभूति पर निर्भर करती हैं।

प्रत्याक्षणात्मक संगठन

1.5 **गेस्टाल्ट**

वर्दीमर तथा उनके सहयोगी गेस्टाल्टवादियों के अनुसार उद्दीपक का प्रत्यक्षीकरण (Organized) रूप में होता है, न कि उद्दीपक के अवयवों या घटकों (Components) का अलग – अलग प्रत्यक्षीकरण होता है।

वर्दीमर (Wertheimer) महेदय ने प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले कुछ तत्वों का वर्णन अपने प्रयोगो के परिणाम के आधार पर किया है। ये तत्व प्रत्यक्षीकरण को संगठित करते हैं। इससे यह तात्पर्य है हमारे समक्ष उसके उद्दीपक आते है और अनेक प्रकार की उत्तेजनाएं होती है।

प्रत्यक्षीकरण का संगठन कुछ विशिष्ट तत्वों पर निर्भर रहता है और उन्हीं विशिष्ट तत्वों से हमें विशिष्ट प्रकार से प्रत्यक्षीकरण होते है। इन्ही तत्वों को ''प्रत्यक्षीकरण के नियम'' (Law of perception) के नाम से संबोधित किया जाता है। ये तत्व दो प्रकार के होते है – (i) बाह्य (ii) आंतरिक। बाह्य तत्व वे है जो बाह्य उत्तेजना मे पाये जाते है और आंतरिक अंग अथवा तत्व स्वयं व्यक्ति से जो प्रत्यक्षीकरण कर रहा है, पाए जाते हैं।

प्रत्यक्षीकरण दो प्रकार से होता हैं – (क) यह विभिन्न उत्तेजनाओं को मिलाकर एक बड़ी इकाई (Larger) के रूप में रखने से होता है, और (ख) बड़ी इकाई का छोटी – छोटी इकाईयों में विभेदीकरण (Differentiation) के द्वारा भी होता है। हम पहली क्रिया को 'संश्लेषण' (Synthesis), और दूसरी क्रिया को 'विश्लेषण' (Analysis) कहते हैं।

1.6 आकृति – पृष्ठभूमि

प्रत्येक आकृति की कोई न कोई पृष्ठभूमि अवश्य होती है यद्यपि आकृति और पृष्ठभूमि एक– दूसरे से संबंधित होती है फिर भी इनमें भिन्नता होती है, Rubin, 1915, 1921 ने सर्वप्रथम निरर्थक आकृतियों का विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमियों में प्रायोगिक अध्ययन किये हैं तथा इन अध्ययनों के पश्चात कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले है। इनमें से कुछ प्रमुख निष्कर्ष अग्र प्रकार से हैं –

(1) आकृति अधिक संरचित तथा रूप गुण (Form Character) वाली होती है। जबकि पृष्ठभूमि आकृति की अपेक्षा कम संरचित, कम रूप – गुण वाली, कम स्पष्ट और कम संगठित होती है।

(2) आकृति पृष्ठभूमि से उभरी हुई प्रतीत होती है तथा पृष्ठभूमि आकृति के नीचे या पीछे फैली हुई प्रतीत होती है।

(3) प्रत्यक्षीकरणकर्ता को आकृति अधिक पास तथा पृष्ठभूमि अपेक्षाकृत दूर प्रतीत होती है।

(4) आकृति अधिक सजीव और प्रभावोत्पादक लगती है जबकि पृष्ठभूमि इसकी तुलना में कम सजीव और कम प्रभावोत्पादन होती है। यही कारण है कि आकृति स्मृति की अपेक्षा अधिक स्थायी होती है।

(5) आकृति में वस्तु गुण (Object Character) अधिक मात्रा में पाया जाता है तथा पृष्ठभूमि में यह वस्तु गुण अपेक्षाकृत कम मात्रा में पाया जाता है।

(6) आकृति का संरचना धरातल (Surface Texture) पृष्ठभूमि की अपेक्षा अधिक निश्चित होता हैं। जब उद्दीपक क्षेत्र में ऊर्जा का वितरण सजातीय होता है तब आकृति और पृष्ठभूमि में अंतर अथवा पृथक्करण (Segregation) सम्भव नहीं होता है। ऐसी परिस्थिति को तकनीकी भाषा में गैन्जफील्ड (Ganzfield) कहते है। कुछ मनोवैज्ञानिकों (Hockberg, 1951 ; Cohen, 1957) ने गैन्जफील्ड से संबंधित

अध्ययनों के आधार पर बताया कि जब उद्दीपक और पृष्ठभूमि की तीव्रता में अंतर बढ़ाया जाता है तब आकृति और पृष्ठभूमि में अंतर स्पष्ट होने लगता है। एटकिन्सन तथा एमोन्स (Atkinson and

Amones, 1952) ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि अभ्यास आकृति के प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।**आकृति की सापेक्षित अस्थिरता और**

स्थिरता (Relative Instability and Stability of figure)

इस दिशा में हुए प्रयोगत्मक अध्ययनों में यह देखा गया है कि आकृति का अनुभव अस्थिरता से स्थित संगठन की ओर क्रमशः विकसित होता है। अस्थिर से स्थिर संगठन के विकसित होने में कुछ समय अवश्य लगता है। साथ ही साथ इस संगठन की एक विशेष दिशा भी होती है। आकृति एवं पृष्ठभूमि का पृथक्करण स्थिर आकृति और पृष्ठभूमि के प्रत्यक्षीकरण का केवल प्रथम तथा आरम्भिक चरण है। आकृति की अस्थिरता और स्थिरता से संबंधित अध्ययन निम्न प्रकार से हैं –

(1) **अवरूद्ध प्रतिमा (Stopped Image)** : प्राणी की आँख गतिशील होती है तथा रेटिना में भी इस गति की संवेदी (Corresponding) गति पाई जाती है। आँख के पास का उद्दीपक रेटिना के अनेक बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है अतः प्रतिमा में भी गति पाई जाती है। परन्तु यदि इस गति को अवरूद्ध कर दिया जाये तो प्रत्यक्षीकरण प्रभावित होता है। इस दिशा में कार्न स्वीट और उनके साथियों (1953, 1956) द्वारा किए गए प्रयोगों का उदाहरण दिया जा सकता है। इनके एक प्रयोग में देखा गया कि प्रारम्भ में रेखा साफ, कुछ सैकण्ड बाद लुप्त हुई दिखाई दी और अंत में रेखा दिखाई ही नहीं पड़ी। जब इस रेखा की मोटाई बढ़ाई गई तो लुप्त होने में समय अधिक लगा तथा लुप्त होने के बाद भी कभी – कभी रेखा दिखाई दी।

(2) **धुँधली प्रतिमा (Blurred Image)** : जब प्रतिमा धुँधली होती है तो वह शीघ्र ओझल हो जाती है। आकृति और पृष्ठभूमि की सीमा रेखा धुँधली की अपेक्षा जितनी तीव्र होती है, प्रत्यक्षीकरण उतना ही स्पष्ट होता है।

(3) **उत्क्रमण आकृति तथा पृष्ठभूमि (Reversible Figure and Background)** : उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आकृति और पृष्ठभूमि के पृथक्करण के लिए दो तत्व आवश्यक हैं – प्रथम यह कि सीमा रेखायें तीक्ष्ण होनी चाहिए, द्वितीय यह कि उद्दीपन मे विषमता (Hetrogeneity) आवश्यक है। कुछ उद्दीपक अथवा आकृतियाँ अनेक अर्थ वाली अथवा अस्पष्ट (Ambiguous) होती है, इनका प्रत्यक्षीकरण करने पर एक से अधिक आकृतियाँ तथा संबंधित पृष्ठभूमि दिखाई देती है। अनेक अर्थ

वाली आकृतियों का एक प्रकार उत्क्रमणशील (Reversible) आकृति भी है। इस प्रकार की आकृति निम्न चित्र में दिखाई गई हैं।

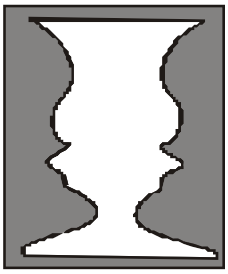

चित्र – Reversible Figure and Background

निम्न चित्र में दो आकृतियाँ हैं – यदि हम सफेद भाग को आकृति मान ले तो काला भाग पृष्ठभूमि के रूप में दिखाई देता है और सफेद भाग एक फूलदान के रूप मे दिखाई देता है। दूसरी और यदि काले भाग की आकृति माने तो सफेद भाग पृष्ठभूमि का कार्य करता है और काले भाग में आमने – सामने मुँह किये दो व्यक्तियों की आकृतियाँ प्रतीत होती है। दोनो विकल्प आकृतियों का प्रत्यक्षीकरण करेन के बाद यदि इस बात पर केन्द्रित किये जाते तो आकृतियों मे विचलन दिखाई देता है, अर्थात् कभी एक आकृति तो कभी दूसरी आकृति दिखाई देती है। उपर्युक्त उत्क्रमणशील आकृति पृष्ठभूमि में तीक्ष्ण सीमा – रेखा भी है, साथ ही साथ उद्दीपक की विषमता भी है फिर भी प्रत्यक्षीकरण स्थिर न होकर अस्थिर है। कोहलर (1945) एवं उनके साथियों ने इस प्रकार की आकृतियों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकला कि उत्क्रमणशील आकृति पृष्ठभूमि प्रत्यक्षीकरण का कारण स्नायुओं (Neurons) की थकान हैं।

1.7 संगठन के नियम संगठन के बाह्य नियम

1. **सहचारिता (Contiguity)** – वे उत्तेजनाएं जो काल या स्थान में एक – दूसरे के निकट होती है, मिलकर सरलता से एक इकाई का रूप धारण कर लेती है।

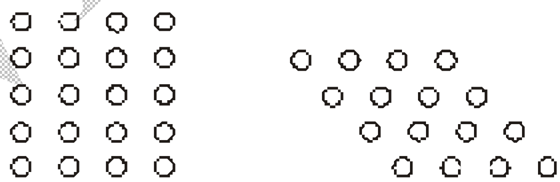

VPM CLASSES

उपर्युक्त चित्र में हम 5,4 तिरछी रेखायें देखते है। और समतल (Horizontal) रेखाओं की ओर ध्यान नही देते है। इसका कारण यह है कि तिरछी रेखा व्यक्त करने वाली बिन्दु समतल रेखा व्यक्त करने वाली बिन्दुओं की अपेक्षा निकट है। इस प्रकार उन बिन्दुओं में सरलतम से समूहीकरण (Grouping) हो जाता है।

2. **समानता (Similarity)** – आपस में समानता रखने वाली उत्तेजनाओं का एकीकरण (Unification) उन उत्तेजनाओं की अपेक्षा जो असमान है, सरलता से हो जाता है।

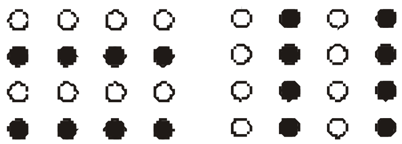

उपर्युक्त चित्रों मे सहचारिता तो समान है, परन्तु समानता में अंतर है। समता के कारण ही हम प्रथम चित्र में समतल रेखाएं देखने को बाध्य होते है और और दूसरे चित्र में लम्बवत् (Vertical) रेखाएं देखते हैं :

समानता मे भी कई प्रकार की हो सकती हैं : – आकर में, तीव्रता में, गुण इत्यादि में।

3. **आच्छादन (Inclusiveness or Closure)** – हम जब कोई ऐसी आकृति देखते है जिसका अंग अपूर्ण है तो हम उस अपूर्णता की ओर ध्यान न देकर आकृति को पूर्ण रूप से देखते है। यदि हमको ऐसे चित्र दिखाए जायें, जिसमें कोई भाग टूटा हुआ है, जैसा दांयी ओर चित्र, तो भी हमें पूर्ण ही दिखाई पडेगा।

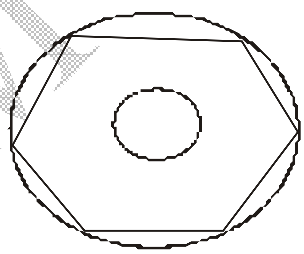

अनेक बार उद्दीपक व्यवधान रिक्त स्थान (Gaps) छोड़ देते है जिन्हें मस्तिष्क स्वयं पूरा कर लेता है। यह आच्छादन मस्तिष्क के प्रभाव के कारण होता है।

संगठन के आंतरिक नियम

1. **परिचय (Famililarity) -** यदि एक नये संगठन को हमने सीख लिया है तो भविष्य में उसी संगठन का प्रत्यक्षीकरण सरल हो जाता है। ऐसा परिचय के कारण ही होता है। यदि हम उपर्युक्त चित्र में एक बार ब्यवधान को देख लेते है और दूसरे समय जब चित्र हमारे सम्मुख आता है तो हम व्यवधान सरलता से हमें दिखाई पड़ जाता है। इस प्रकार यदि किसी जटिल चित्र के विभिन्न अंग हम पहचान लेते है तो दूसरे समय उस चित्र को देखते ही उसके विभिन्न अंगो को सरलता से अलग कर लेते है। परन्तु कभी – कभी जब हम किसी तत्व से पूर्णतया परिचित होते है तब भी हम उसका ठीक से प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पातें। विशेष रूप में उस समय जब दूसरे खण्ड को उसे छिपाने वाले हैं, शक्तिशाली होते हैं। निरंतता के कारण हम LION शब्द से पूर्ण परिचित होने पर भी उसके प्रत्यक्षीकरण नहीं कर पाते है। परिचय के साथ मानसिक झुकाव भी अति आवश्यक हैं, अन्यथा हमारे प्रत्यक्षीकरण स्पष्ट नहीं होगें।
2. **मानसिक तत्परता (Mental Set) –** जैसी हमारी मानसिक तत्परता होती है, उसी के अनुरूप हमें किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण होता है। हमारी मानसिक तत्परता उन प्रेरणाओं पर निर्भर रहती है जो उस समय हमारे ऊपर विशेष प्रभाव डालती है, जब हमें उत्तेजना मिल रही है।
3. **मनोवृत्ति (Attitude) –** हमारी **मनोवृत्ति** भी हमारी उत्तेजना के प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करती है। यही कारण है कि उत्तेजना एक – सी होने पर भी इसका प्रत्यक्षीकरण विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न प्रकार से होता है, जैसे – जब एक बाग में कुछ व्यक्ति जाते है तो वहां फूल – पौधो का अवलोकन अपनी मनोवृत्ति के अनुसार करते है। एक वनस्पति विज्ञानवेत्ता वहां के पेड़ पौधों को विज्ञान की दृष्टि के महत्व से देखेगा, एक माली उनके उगाने की विधि, खाद इत्यादि की दृष्टि से प्रत्यक्षीकरण करेगा, एक कवि उनकी सुन्दरता का अवलोकन करेगा, और एक बालक सुन्दर फूल का प्रत्यक्षीकरण करेगा। ऐसी उनकी रूचि एवं मनोवृत्ति के कारण होता है।

आकृति और पृष्ठभूमि (Figure & Background) – प्रत्येक संगठित वस्तु हमको एक पृष्ठभूमि (Background) में रखी हुई प्रतीत होती हैं यह वस्तु एक सीमा – रेखा को अपने चारो ओर बना लेती है जिसके अंदर वह सीमित रहती है। इसी क्रिया को हम विश्लेषण (Analysis) के नाम से पुकारते है। सीमांत रेखाओं (Boundary Lindes) का बनना, प्रकाश की तीव्रता पर बहुत – बहुत निर्भर है।